राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 1] पंचम विधान सभा के प्रथम सत्र, 1972 का प्रथम दिवस [संख्या 1

सोमवार

दिनांक 20 मार्च, 1972

विधान सभा की बैठक म. पू. 11 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री यशवन्तसिंह नाहर, कार्यकारी अध्यक्ष, पदासीन)

कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा सदन को सम्बोधन।

श्री कार्यकारी अध्यक्ष : सदन के माननीय नेता महोदय एवं सम्मानित सदस्य वृन्द !

भारतीय संविधान की धारा 188 के अन्तर्गत मैं महामहिम राज्यपाल के द्वारा मनोनीत किया गया हूं कि आगामी पांच वर्ष के लिए आपको अपने महान्, गुरुतम दायित्व की प्रतिज्ञा का निरीक्षण करूं।

यह प्रतिज्ञा कर आप इस महान् सदन की महान् गरिमा को निभाते हुए राजस्थान की जनता के प्रति अपने गुरुतम उत्तरदायित्व को सच्चाई, निष्ठा एवं श्रद्धा से निभा सकें।

यह गुरुतम दायित्व हमारा हमारे मतदाता के प्रति है कि आप सदन में या बाहर ऐसा कार्य करें जो राजस्थान की जनता के हित में हो। जनता हम सब से एक ही आशा लेकर चली है कि जनता की गरीबी मिटे, कठिनाइयां हल्की हों और समस्याएं सुलझ सकें। यह निर्वाचन पिछले चार चुनाव से अधिक भिन्न है। वे जो सत्ता के पक्ष में हैं या विरोध में—सबसे राजस्थान की जनता ने एक विश्वास लेकर हमें भेजा है कि हम इस भार को राजस्थान के सर्वोन्मुखी विकास में लगा सकें। उनका विश्वास श्वासारुद्ध है, आशाएं गगन-चुम्बी और उमंगें उमड़ती हुईं। तो आइये, हम उनकी आशा, विश्वास और उमंगों के अनुकूल अपने को बनाएं।

राजस्थान लाखों वर्षों से गरीबी, बेहयाई, दमन और हीनता में गुमराह राजस्थान—गत पच्चीस वर्षों में हमने कई डग भरे हैं लेकिन फिर भी समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। विकराल गरीबी के साथ एक करोड़ नए मुंह हमने जोड़ लिए हैं और हमारा दायित्व अधिक बढ़ गया है। उस पर ये देखिए, फटे चिथड़ों में अपनी नग्नता को छिपाए नारियां हैं, पौष्टिक भोजन के अभाव में फूले पेट, रक्तहीन बैठे चेहरे, गीड़ से बहती आंखों की हमारी भावी पीढ़ी रोष में हमें ललकार रही है। बेरोजगारी से विक्षिप्त राजस्थान का युवा हमें चुनौती दे रहा है। घास फूस के कच्चे घरों और छिद्र छिद्र वस्त्रों में लिपटा राजस्थानी आपकी ओर आशा से एकटकी लगाए निहार रहा है। राजस्थान के 2.57 करोड़ मानव श्वासारुद्ध आपको देख रहे हैं कि आप उनके अभाव अभियोगों को दूर करें, उनकी गरीबी को

(श्री कार्यकारी अध्यक्ष)

मिटाने के लिए कदम उठा सकें और उनकी समस्याओं को सुलझा सकें और सदन में बैठकर ऐसे विधान की संरचना करें जिससे भूखे पेट को रोटी, नंगे बदन को कपड़ा और धूप-छांह से बचने के लिए मकान दे सकें और खाली हाथों को काम दिया जा सके। यह तब ही सम्भव है कि हमारे समाज का आमूलचूल परिवर्तन हो–अतः हमें ऐसे समाज की स्थापना करनी है जहां पूंजी का महत्व समाप्त हो और श्रम सर्वोपरि बने।

यह पद हमारे व्यक्तित्व के विकास और पद लोलुपता के साधन नहीं हैं बल्कि जन सेवा का मानदण्ड ही हमारे व्यक्तित्व का सम्बल बने।

ये पांच वर्ष हमारी कसौटी के हैं। लुभावने नारों का मायाजाल समाप्त होना चाहिए। यदि हमने सही दिशा में डग नहीं भरे तो जनता की आशाएं विद्रोह की राह पकड़ेंगी। कोई भी नारा, उपदेश और सांख्यायिकी उन्हें रोक नहीं सकेगी। प्रवंचनाएं और मृगजाल अब समाप्त होना चाहिए। वास्तविक परिवर्तन ही हमें बचा सकेगा अन्यथा सदन के माननीय नेता महोदय के शब्दों में दूर क्षितिज पर बड़ी आतुरता से हमें निहार रही है खूनी क्रांति!

तो आइए, हम इस महान् दायित्व को समझने, सम्भलने और निपटने के लिए इस सदन के गौरव और गरिमा को अक्षुण्य रखते हुए शपथ ग्रहण करें।

अस्थायी अध्यक्ष की नियुक्ति एवं उनके द्वारा शपथ ग्रहण आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

श्री सचिव (राजस्थान विधान सभा) : श्री यशवन्तसिंह की अस्थायी अध्यक्ष पद पर नियुक्ति, उनके समक्ष विधान सभा के सदस्यों द्वारा शपथ लेने अथवा प्रतिज्ञान करने तथा उनके द्वारा दिनांक 19 मार्च, 1972 को प्रातः 11 बजे राज्यपाल महोदय के सम्मुख शपथ लेने सम्बन्धी अधिसूचनायें पढ़ कर सुनाता हूं जो इस प्रकार हैं:–

1. अधिसूचना संख्या एफ. 1 (1) संसद/72, दिनांक 17 मार्च, 1972:–

भारत के संविधान के अनुच्छेद 180 के खण्ड (1) द्वारा प्रदत शक्तियों के प्रयोग में, राजस्थान के राज्यपाल, श्री यशवन्तसिंह जो राजस्थान विधान सभा के सदस्य हैं, को 20 मार्च, 1972 से प्रारम्भ होने वाले पंचम राजस्थान विधान सभा के सत्र के दौरान, उस समय तक जब तक कि अध्यक्ष का यथाविधि निर्वाचन न हो जाय, उक्त विधान सभा के अध्यक्ष के कर्त्तव्यों का निष्पादन करने के लिये नियुक्त करते हैं।

राज्यपाल के आदेश से,
उपदेश नारायण माथुर,
शासन सचिव।

(श्री सचिव)

2. अधिसूचना संख्या एफ. 1 (1) संसद।72, दिनांक 17 मार्च, 1972 में भारत के संविधान के अनुच्छेद 188 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में, राजस्थान के राज्यपाल, श्री यशवंतसिंह को उस व्यक्ति के रूप में नियुक्त करते हैं जिसके समक्ष कि पंचम राजस्थान विधान सभा के सदस्य शपथ लेंगे या प्रतिज्ञान करेंगे तथा उस पर हस्ताक्षर करेंगे।

उपदेश नारायण माथुर,
शासन सचिव

3. अधिसूचना संख्या, एफ. 14 (1) सदन।वि. सं.172, दिनांक 19 मार्च 1972–

श्री यशवंत सिंह, सदस्य विधान सभा ने भारत के विधान की तृतीय अनुसूची में दिये गये प्रपत्र 7 के अनुसार दिनांक 19 मार्च, 1972 को प्रातः 11 बजे राज्यपाल महोदय के समक्ष, शपथ ग्रहण कर ली है।

सदस्यों द्वारा शपथ अथवा प्रतिज्ञान

(निम्नलिखित माननीय सदस्यों ने नाम के आगे अंकित शपथ ली या प्रतिज्ञान किया तथा हस्ताक्षर किये):–

1.	श्री बरकतुल्ला खां	(तिजारा)	शपथ ग्रहण की
2.	श्री हरदेव जोशी	(बांसवाड़ा)	,,
3.	श्री परसराम मदेरणा	(भोपालगढ़)	,,
4.	श्री नारायणसिंह मसूदा	(मसूदा)	,,
5.	श्री चंदनमल बैद	(सरदार शहर)	प्रतिज्ञान किया
6.	श्री रामचन्द्र चौधरी	(हनुमानगढ)	शपथ ली
7.	श्री ओंकारलाल चौहान	(डग)	,,
8.	श्रीमती कमला त्रैनोवाल	(दूदू)	,,
9.	श्री जुझारसिंह	(रामगंज मंडी)	,,
10.	श्री मूलचन्द	(जहाजपुर)	,,
11.	श्री अजीतसिंह	(टौंक)	,,
12.	श्री अब्दुल हादी	(चौहटन) उर्दू में	,,
13.	श्री अमृतलाल गहलोत	(सरदारपुरा)	,,
14.	श्री उम्मेदीलाल	(हिन्डौन)	,,
15.	श्रीमती उषा प्रकाश	(बैर)	,,
16.	श्री करनसिंह	(डीग)	,,

Page No.4

	श्रीमती कान्ता कथूरिया	(कोलायत)	(अनुपस्थित)
17.	श्री कालूराम आर्य	(विलाड़ा)	शपथ ली
18.	श्री किशन मोटवानी	(अजमेर पश्चिम)	,,
19.	श्री किशनसिंह	(आसिन्द)	,,
20.	श्री केदारनाथ	(गंगानगर)	प्रतिज्ञान किया
21.	श्री केशरदेव	(लक्ष्मणगढ)	शपथ ली ।
22.	श्री केसरीमल	(ब्यावर)	प्रतिज्ञान किया
23.	श्री खेतसिंह	(शेरगढ)	शपथ ली
24.	श्री गंगाराम चौधरी	(गुढा मालानी)	,,
25.	श्री गणेशलाल	(गंगरार)	,,
26.	श्री गिरधारीलाल भार्गव	(हवामहल जयपुर)	,,
27.	श्री गिर्राज प्रसाद	(बयाना)	,,
28.	श्री गुमानमल लोढा	(जोधपुर)	,,
29.	श्री गुरदयालसिंह सिन्धु	(करणपुर)	,,
30.	श्री गुलाबसिंह शक्तावत	(वल्लभनगर)	,,
31.	श्री गोकुलचन्द	(कठूमर)	,,
32.	श्री गोपाल जोशी	(बीकानेर)	,,

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : आप तो रसगुल्ले बांट देते ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : बीकानेर के रसगुल्ले ।

33.	श्री गोपालसिंह	(खण्डेला)	,,
34.	श्री गोपीलाल	(पीपल्दा)	,,
35.	श्री गोरधन सिंह	(सीकर)	,,
36.	श्रीमती गौरी पूनिया	(मकराना)	,,
37.	श्री गौरीशंकर	(खानपुर)	,,
38.	श्री घासीराम यादव	(बहरोड़)	,,
39.	श्री चतुरभुज	(टोडारायसिंह)	,,
40.	श्री चिम्मनसिंह भाटी	(भीम)	,,
41.	श्री चुन्नीलाल (इन्दलिया)	(नोखा)	,,
42.	श्री चेतराम	(टोडाभीम)	,,
43.	श्री जगमोहनसिंह	(छबड़ा)	,,
44.	श्री जनार्दनसिंह गहलोत	(गांधीनगर जयपुर)	,,
45.	श्रीमती जमुना सोलंकी	(केकड़ी)	,,
46.	श्री जयनारायण	(लसाड़िया)	,,
47.	श्री जवाहरमल	(सहाड़ा)	,,

Page No.5

48. श्री जानमोहम्मद खां	(पिड़ावा)	शपथ ली
49. श्री जिथिंग	(कुशलगढ़)	,,
50. श्री जेठमल	(परबतसर)	,,
51. श्री जेठमल आर्य	(रेवदर)	,,
52. श्री जैकिशन	(फागी)	,,
53. श्री जैसा राम	(सिवाना)	,,
54. श्री झावरमल	(फतेहपुर)	,,
55. श्री दलपतसिंह	(खारची)	,,
56. श्री दिनेश डांगी	(देसूरी)	,,
57. श्री दीपंकर	(लाडनूं)	,,
58. श्री देवीलाल मीणा	(सराड़ा)	,,
59. श्रीमती नगेन्द्र बाला	(दीगोद)	,,
60. श्री नत्थीसिंह	(नदबई)	,,
61. श्री नन्दलाल बैरवा	(पाटन)	,,
62. श्री नाथूराम	(बागीडोरा)	,,
63. श्री नानालाल	(राजसमन्द)	,,
64. श्रीमती निर्मला कुमारी	(चित्तौड़गढ़)	,,
65. श्री नारायणसिंह	(दांतारामगढ़)	,,
66. श्री निरंजन नाथ आचार्य	(मावली)	,,
67. श्री पी. के. चौधरी	(फुलेरा)	प्रतिज्ञान किया
68. श्री पुखराज कालानी	(सोजत)	शपथ ली
69. श्री पूनमचन्द विश्नोई	(भीनमाल)	,,
70. श्री प्रतापसिंह	(किशनगढ़)	,,
71. श्री प्रद्युम्नसिंह	(राजाखेड़ा)	,,
72. श्रीमती प्रभा मिश्रा	(पुष्कर)	,,
73 फारूक हुसैन	(सवाई माधोपुर)	,,
74. श्री फूलचन्द जैन	(सुजानगढ़)	,,
75. श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता	(बानसूर)	,,
76. श्री बनवारीलाल	(धौलपुर)	,,
77. श्री बनवारीलाल	(निवाई)	,,
78. श्री विश्वम्भरनाथ जोशी	(बांदीकुई)	,,
79. श्री बीरबल	(सांगरिया)	,,
80. श्री बृजेन्द्रपाल सिंह	(करौली)	,,
81. श्री बृजेन्द्रसिंह	(भरतपुर)	,,

Page No.6

82. श्री बेगाराम	(रायसिंह नगर)	शपथ ली
83. श्री भंवरलाल भदादा	(भीलवाड़ा)	,,
84. श्री भंवरसिंह	(नवलगढ़)	,,
85. श्री भगराज चौधरी	(रानीवाड़ा)	,,
86. श्रीमती भगवती देवी	(भिनाय)	,,
87. श्री भरतलाल	(बामनवास)	,,
88. श्री भानुकुमार शास्त्री	(उदयपुर)	,,
89. श्री भीखाभाई	(सागवाड़ा)	,,
90. श्री भीमराज	(नोहर)	,,
91. श्री भीमसेन	(लूनकरणसर)	,,
92. श्री भुवनेश चतुर्वेदी	(कोटा)	,,
93. श्री भूरा	(शाहपुरा)	,,
94. श्री भूराराम	(आबू)	,,
95. श्री भैरूलाल	(अकलेरा)	,,
96. श्री भोपालसिंह	(जैसलमेर)	,,
97. श्री भीमाराम	(डीडवाना)	,,
98. श्रीमती मदनकौर	(पचपदरा)	,,
99. श्री मनफूलराम	(केसरीसिंहपुरा)	,,
100. श्री मनोहर कोठारी	(नाथद्वारा)	,,
101. श्री मनोहरलाल	(कामां)	,,
102. श्री महेन्द्रकुमार परमार	(पाडवा)	,,
103. श्री माणकचन्द सोगानी	(अजमेर–पूर्व)	,,
श्री मानसिंह	अनुपस्थित	
104. श्री मालाराम	(नीम का थाना)	,,
105. श्री मीठालाल	(लालसोट)	,,
106. श्री मुन्शीलाल महावर	(बस्सी)	,,
107. श्री मूलचन्द सांमरिया	(दौसा)	,,
108. श्री मोहनराज जैन	(बाली)	प्रतिज्ञान किया
109. श्री मोहनलाल छुंगानी	(फलौदी)	,,
110. श्री मोहरसिंह	(चूरू)	शपथ ली
111. श्री मोहम्मद उस्मान	(नागौर)	(उर्दू में)
112. श्री मोहम्मद गफ्फारअली	(जौहरी बाजार जयपुर)	प्रतिज्ञान किया
113. श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा	(सूरतगढ)	,,
114. श्री रघुनाथ विश्नोई	(सांचोर)	शपथ ली

Page No.7

115.	श्री रणजीतसिंह	(ओसियां)	शपथ ली
116.	श्री रमेशचन्द्र मीणा	(हिण्डोली)	,,
117.	श्री राजेन्द्रकुमार भारतीया	(बूंदी)	,,
118.	श्री राजेन्द्रसिंह	(उनियारा)	,,
119.	श्री रामकिशोर व्यास	(चौमूं)	,,
	श्री रामकुमार	(सपोटरा)	अनुपस्थित
120.	श्री राम गोपाल	(किशनगंज)	शपथ ली
121.	श्री राम गोपाल	(खण्डार)	,,
122.	श्री रामचन्द्र	(चौरासी)	,,
123.	श्री रामचन्द्र	(सिकराय)	,,
124.	श्री रामचरण	(अटरू)	,,
125.	श्री रामजीलाल	(खेतड़ी)	,,
126.	श्री रामनारायण चौधरी	(मंडावा)	,,
127.	श्री रामप्रसाद बोहरा	(झालरापाटन)	,,
128.	श्री रामरघुनाथ	(डेगाना)	,,
129.	श्री रामलाल	(बाड़ी)	,,
130.	श्री रामलाल	(मेडता)	,,
131.	श्री रामसिंह कुड़ी	(जायल)	,,
132.	श्री रामसिंह	(मंडावर)	,,
133.	श्री रामसिंह यादव	(लूणी)	,,
134.	श्री रामसिंह	(सादुलपुर)	,,
135.	श्री रामानन्द अग्रवाल	(अलवर)	प्रतिज्ञान किया
136.	श्री रामेश्वरलाल	(गुढ़ा)	शपथ ली
137.	श्री रामेश्वरलाल चौधरी	(नांवा)	,,
138.	श्री रावतराम	(छापर)	,,
139.	श्री रोशनलाल शर्मा	(सलूम्बर)	,,
140.	श्री लक्ष्मण सिंह	(डूंगरपुर)	,,
141.	श्री लक्ष्मीनारायण	(थानागाजी)	,,
142.	श्री ललितसिंह	(बड़ी सादड़ी)	,,
143.	श्री लाला	(फलासिया)	,,
144.	श्री लूणाराम	(डूंगरगढ़)	,,
145.	श्री विजयसिंह राठौड	(मांडल)	,,
146.	श्री विट्ठल	(पीपलखूंट)	,,
147.	श्री वृद्धिचन्द जैन	(बाड़मेर),	,,

Page No.8

148.	श्री विद्यासागर	(खेरवाड़ा)	शपथ ली
149.	श्री विरदाराम	(जालोर)	,,
150.	श्री विश्वम्भरदयाल	(महुआ)	प्रतिज्ञान किया
151.	श्री शंकरलाल जाट	(कपासन)	शपथ ली
152.	श्री शंकरलाल	(पाली)	,,
153.	श्री शंकर सिंह रावत	(नसीराबाद)	,,
154.	सु श्री शकुन्तला श्रीवास्तव	(आमेर)	,,
	श्री शांतिलाल कोठारी	(सिरोही)	अनुपस्थित
155.	श्री शिवचरण माथुर	(मांडलगढ़)	शपथ ली
156.	श्री शिवनारायण	(बारां)	,,
157.	श्री शीशराम ओला	(पिलानी)	,,
158.	श्री शोभाराम	(रामगढ़)	प्रतिज्ञान किया
159.	श्री श्रीनिवास शारदा	(निम्बाहेड़ा)	,,
160.	श्री श्रीराम गोटेवाला	(किशनपोल जयपुर)	,,
161.	श्री सज्जनसिंह	(सुमेरपुर)	शपथ ली
162.	श्रीमती समुन्द्र कंवर	(आहोर)	,,
163.	श्री सम्पतराम	(खैरथल)	,,
164.	श्री सहदेव शर्मा	(जमुवारामगढ़)	,,
165.	श्री सांवरमल मोर	(श्री माधोपुर)	,,
166.	श्री सुखलाल सेमचा	(जैतारण)	,,
167.	श्री सुन्दर लाल	(सूरजगढ़)	,,
168.	श्रीमती सुमित्रासिंह	(झुन्झुनूं)	प्रतिज्ञान किया
169.	श्री सुरेन्द्रप्रसाद	(मालपुरा)	,,
170.	श्री सुरेशचन्द्र	(कोटपुतली)	,,
171.	श्री हनुमान सहाय	(बैराठ)	,,
172.	श्री हरलाल मीणा	(प्रतापगढ़)	,,
173.	श्री हरिकिशन	(राजगढ़)	,,
174.	श्री हरिशचन्द्र पालीवाल	(गंगापुर)	,,
175.	श्री हरिसिंह	(बेगूं)	,,
176.	श्री हीरालाल देवपुरा	(कुम्भलगढ़)	,,
177.	श्री हुक्मसिंह	(शिव)	,,
178.	श्री ज्ञानसिंह चौधरी	(भादरा)	प्रतिज्ञान किया

(श्री अल्काराम के बारे में पूछने पर)

Page No.9

श्री रोशनलाल : वो तो पहले भी यहीं थे।

173. श्री अलखा राम (गोगुन्दा) शपथली

श्रीमती कान्ता कथूरिया : अनुपस्थित।

श्री मानसिंह अनुपस्थित

श्री रामकुमार अनुपस्थित।

श्री शान्तिलाल कोठारी : अनुपस्थित।

कार्यकारी अध्यक्ष : मैं सदन की कार्यवाही 4 बजे मध्यान्ह पश्चात् तक के लिए स्थगित करता हूं।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही मध्यान्ह पश्चात् 1 बज कर 8 मिनट पर, मध्यान्ह पश्चात् 4 बजे तक के लिये स्थगित हुई)

शुद्धि-पत्र

क्र. सं.	स्कम्भ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
1.	5 व 6	10	के विधान	के संविधान
2.	5 व 6	16	गृहण	ग्रहण
3.	7 व 8	14	सिन्धु	सन्धु
4.	7 व 8	नीचे से 7	(इन्दलिया)	इन्दलिया
5.	7 व 8	नीचे से 3	सोलंकी	सोलंको
6.	8 व 10	4	जैठमल	जेठमल
7.	8 व 10	6	जैसाराम	जेसाराम
8.	9 व 10	नीचे से 9	फारूक हुसैन	श्री फारूक हुसैन
9.	11 व 12	13	मैरूलाल	भैंरूलाल
10.	11 व 12	21	अनुपस्थित	(अनुपस्थित)
11.	13 व 14	नीचे से 9	(सलूम्बर)	(सलुम्बर)
12.	15 व 16	8	कौठारी	कोठारी
13.	15 व 16	16	समुन्द्र	समुद्र
14.	15 व 16	नीचे से 6	हरिशचन्द्र	हरिश्चन्द्र
15.	17 व 18	2	शपथली	शपथ ली
16.	17 व 18	3 से 6	अनुपस्थित ।	(अनुपस्थित)
17.	17 व 18	7	कार्यकारी अध्यक्ष	श्री कार्यकारी अध्यक्ष

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 1] पंचम विधान सभा के प्रथम सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 2

सोमवार,

दिनांक 20 मार्च, 1972

विधान सभा को बैठक म.प. 4.2 को विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री यशवंत सिंह नाहर कार्यकारी अध्यक्ष, पदासीन)

सदस्यों द्वारा शपथ अथवा प्रतिज्ञान

कार्यकारी अध्यक्ष : रिमेनिंग ओथ्स।

विधान सभा सचिव : श्रीमती कान्ता कथूरिया (अनुपस्थित)

श्री मानसिंह (कुम्हेर) (अनुपस्थित)

श्री राम कुमार (सपोटरा) (शपथ ली)

श्री शांतिलाल कोठारी (अनुपस्थित)

कार्यकारी अध्यक्ष : अध्यक्ष के चुनाव के लिये माननीय श्री हरिदेव जोशी प्रस्ताव करेंगे।

अध्यक्ष का निर्वाचन

श्री **हरिदेव जोशी** (स्वास्थ्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि श्री रामकिशोर व्यास, सदस्य, विधान सभा, विभाजन संख्या 121 को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाय।

श्री **परसराम मदेरणा** (कृषि मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कार्यकारी अध्यक्ष : क्योंकि अन्य कोई प्रस्ताव नहीं है इसलिए मैं इसको मत पर रखता हूं....

श्री **केदारनाथ** (गंगानगर) : दूसरा प्रस्ताव है ही नहीं।

(ध्वनि मतदान के पश्चात्)

कार्यकारी अध्यक्ष : (स्वीकृत)

(प्रस्ताव स्वीकार किया गया)

श्री रामकिशोर व्यास अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मैं घोषणा करता हूं कि वह अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

(श्री बरकतुल्ला खां, मुख्य मंत्री, व श्री लक्ष्मणसिंह ने श्री रामकिशोर व्यास को अध्यक्ष के आसन तक पहुंचाया श्री रामकिशोर व्यास पदासीन)

अध्यक्ष को निर्वाचन पर बधाई

श्री **बरकततुल्ला खां** (मुख्यमंत्री) : माननीय अध्यक्ष, आज उधर के माननीय सदस्यों ने आपको बगैर मुकाबले के चुना है,

(श्री बरकतुल्ला खां)
इस बात से जाहिर है कि सबका आप में विश्वास है, कान्फीडेन्स है। इस सदन की परम्परा रही है कि जहां तक हो सके, बगैर मुकाबले के अध्यक्ष महोदय का चुनाव हो। जो विश्वास आपको इस सदन के द्वारा दिलाया गया है, मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूं कि आप इस सदन के सारे माननीय सदस्यों की रक्षा करेंगे और सुचारु रूप से इस सदन की कार्यवाही को चलाते रहेंगे। मेरे दल और सदन की ओर से मैं आपको बधाई देता हूं।

श्री **निरंजननाथ आचार्य** (मावली) : अध्यक्ष महोदय, इस मौके पर मैं भी अपनी ओर से आपका अभिनन्दन करता हूं। इस सदन की परंपरायें अपूर्व रही हैं और हमें इस बात का गौरव है कि जबसे सदन प्रारंभ हुआ प्रजातन्त्र पद्धति से, तब से लेकर अब तक इसका गौरव, इसकी निष्ठा और इसकी परंपरायें भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त करती रही हैं। आप में सहृदयता, शालीनता और धैर्य है, इस संदर्भ में हमें विश्वास है कि इसके गौरव को, परम्पराओं को, आप पूर्णतः निभायेंगे। अध्यक्ष महोदय, मेरा विश्वास है इस पद के अनुरूप आपका चुनाव हुआ है और भविष्य ही बताएगा कि आपकी शालीनता और निष्ठा जो परम्पराओं में रही है, कितनी सशक्त प्रजातन्त्र प्रणाली को बना सकेगी। यह सदन दो अंगों का है– सत्ता पक्ष और विरोधी पक्ष। विरोधी पक्ष का कर्तव्य और आपका कर्तव्य दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मैं विश्वास रखता हूं कि जहां सत्ता पक्ष का कर्तव्य विरोधी पक्ष को मजबूत बनाने का होता है, उसी दृष्टिकोण से आप विरोधी पक्ष, जो अलग अलग टुकड़ों में है, को आप अपने ढंग से सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे। मैं पुनः आपके प्रति आभार प्रदर्शित करता हूं। जो निर्विरोध रूप से आपको चुना गया, उसके लिये भी मैं अपनी प्रसन्नता प्रकट करता हूं और विश्वास रखता हूं कि आप अपने कर्तव्य निर्वहन में निश्चित ही सफल होंगे।

श्री **लक्ष्मणसिंह** (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, प्रस्ताव कर्ता और उसके समर्थन कर्ता द्वारा आपका नाम जो आया यदि 5 सैकिण्ड और सभापति महोदय की ओर से मुझे समय मिलता तो उस प्रस्ताव का मैं सहर्ष अनुमोदन करता। संक्षेप में निवेदन यह है, अध्यक्ष महोदय, कि आपका निर्वाचन निर्विरोध हुआ है। मैं अपने दल की ओर से आपको बधाई अर्पित करता हूं, शुभ कामनायें प्रस्तुत करता हूं। आपको हालांकि यह संकेत दिलाने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु फिर भी मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूं कि जब तक जनतंत्र है, तब तक विरोधी पक्ष का होना अनिवार्य है। आसन के द्वारा मैं यह भी आशंका करूंगा कि विरोधी पक्ष के प्रति आप निष्पक्ष रूप से कृपा दृष्टि रखें। विरोधी पक्ष चाहे सबल हो चाहे निर्बल हो लेकिन विरोधी पक्ष शासनारूढ़ पक्ष के लिए आंख कान और जो कुछ आप कहे अंकुश सब कुछ है। इसलिए विरोधी पक्ष के प्रति निष्पक्षता की भावना, मैं आशा करता हूं कि आसन के द्वारा बनी रहेगी। यह एक स्वस्थ परम्परा है जनतंत्र की और इस सदन ने उस स्वस्थ परम्परा को मजबूत बनाया है,

(श्री लक्ष्मणसिंह)

उसके समर्थन में आसन यथासंभव निर्विरोध निर्वाचित होता रहा और आज इसी खुशी की घड़ी के अन्दर मैं अपने दल की ओर से पुनः आपको बधाई प्रस्तुत करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, आपके इस आसन पर निर्विरोध चुने जाने के लिए मैं आपको अपनी ओर से व अपने दल की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, आपके आसन की बहुत बड़ी जिम्मेदारियां हैं और इस सदन में जिस कार्य के लिए हम लोगों को चुना गया है उस कार्य को पूरा करने के लिए, प्रजातन्त्र में जनता के भले के लिए, इस सदन में हमारे अधिकारों की रक्षा के लिए व इस सदन के कार्य संचालन के लिये आपको चुना गया है। अध्यक्ष महोदय जिस पृष्ठ भूमि में अभी जो चुनाव हुए हैं और इस सदन में चुन कर आये है उनसे जनता को बहुत बड़ी बड़ी आशायें हैं. उन्हें पूरा करने के लिए हमें निस्वार्थ भाव से काम करने की आवश्यकता है। और उन्हें पूरा करने के लिए विधान सभा और सांसद का उपयोग किया जाता है इसलिये मेरा निवेदन है कि हमें अपने सदन के समय को इधर उधर की बातों में गवाने के बजाय, निस्वार्थ भावना से कार्य करने की आवश्यकता है ताकि जो काम हमें जनता के हितों के लिये करने हैं, जो वायदे हमने जनता से किये हैं, उनके लिये इस सदन के समय का सदुपयोग किया जा सके। मैं आशा करता हूं कि आप इसके लिए सदन में नई परम्परायें डालेंगे, जिससे कि यहां सिर्फ बातें ही नहीं हो अपितु जनता के हितों के लिए ठोस कार्यवाही हो सके।

अध्यक्ष महोदय, हमारा प्रान्त एक पिछड़ा प्रान्त है और यहां की जनता गरीब है। आज जनता हमारे से आशा लगाये हुए बैठी है। जो एश्योरेन्सेज हमने उन्हें दिये हैं उन्हें पूरा करने के लिए हमें इस सदन के समय का पूरा सदुपयोग करना चाहिए। मैं समझता हूं कि आपका इसके लिए हमें पूरा सहयोग मिलता रहेगा। एक बार फिर मैं आपको अपनी ओर से व अपने दल की ओर से बधाई देता हूं और विश्वास दिलाता हूँ कि हम आपको पूर्ण सहयोग देते रहेंगे।

श्री गुमानमल लोढ़ा (जोधपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं भारतीय जनसंघ की ओर से आपके निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं। वास्तव में यह बड़े सौभाग्य की बात है। अध्यक्ष महोदय, आपके पद की महान् गरिमा होती है, सदन में सदस्यों के हितों की रक्षा और खास तौर से विरोधी पक्ष के सदस्यों के अधिकारों की रक्षा आपके आसन द्वारा ही की जाती है। आज आपके इस प्रदेश की विधान सभा के निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने से इस सदन की गरिमा भी बढ़ी है। इस प्रदेश के अध्यक्ष की दूसरे प्रदेशों में काफी इज्जत रही है। इस सदन में जो घोषणायें होती हैं उनकी पूर्ति कराने के लिए इस महान् सदन के अध्यक्ष का कर्तव्य होता है क्योंकि इस सदन ने आपको अध्यक्ष चुन कर यह अधिकार आपको दिया है। मुझे विश्वास है कि अध्यक्ष महोदय आपकी नीति सरकारी पक्ष और विरोधी पक्ष दोनों के अन्दर निष्पक्ष रहेगी

(श्री गुमानमल लोढ़ा)

और दोनों पक्षों में ऐसा तालमेल बिठाये रखेंगे जिससे निष्पक्ष कार्य इस सदन में होता रहेगा। मैं आशा करता हूं कि आप इस सदन की गरिमा को उसी तरह निभायेंगे जिस तरह राजर्षि पुरुषोतमदास टन्डन ने निभाई थी। अध्यक्ष महोदय पूर्व में भी इस सदन की महान् परम्परायें रही हैं और उसी तरह आप हमें उत्साहित करते रहेंगे। हमने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष किया था लेकिन वहां की संसदीय परम्पराओं से हम प्रेरणा ले सकते हैं क्योंकि वह उच्च कोटि की है। अध्यक्ष महोदय, जहां तक अध्यक्ष पद के प्रशासनिक दायित्व का सवाल है अध्यक्ष के पद की गरिमा महान् है। आपके पद का कार्य महान है और कभी कभी तो संघर्ष के समय इसकी गरिमा बहुत ही ज्यादा महान् हो जाती है। इसका मैं आपको एक छोटा सा उदाहरण दूं जब इंग्लेन्ड में सम्राट चार्ल्स के खिलाफ जनता ने संघर्ष किया था तो उस वक्त सम्राट ने अपनी सेना को आदेश दिया था कि इग्लैंड के संसद में विरोधी सदस्यों को गिरफ्तार करलो। जब गिरफ्तार करने सेना पहुंची तो वहां के अध्यक्ष ने कहा कि यहां का कोई भी सदस्य गिरफ्तार नहीं होने दिया जायेगा क्योंकि यहां का हर सदस्य मेरी आंख है व कान है मैं उन्हीं को आज्ञा मानता हूं और इस तरह अध्यक्ष ने अपने पद की गरिमा को निभाया। इसी प्रकार मैं चाहूंगा कि आप भी अध्यक्ष महोदय, उसी तरह निष्पक्ष होकर काम इस सदन का करते रहेंगे। एक बार फिर मैं आपको अपने पद के चुने जाने के लिए बधाई देता हूं। और आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरे दल के सदस्य आपको सहयोग देते रहेंगे और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग मिलते रहने से हम सदा ही आगे बढ़ते रहेंगे। धन्यवाद।

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अपनी ओर से व अपनी पार्टी की ओर से आपके विधान सभा के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुने जाने के लिए बधाई देता हूं। अध्यक्ष महोदय, हमारे विधान सभा का एक कार्य जो है वह बहुत ही क्रियेटिव होता है पिछले बीस वर्ष में इस सदन में कई प्रकार के कार्य हुए उसमें कई प्रकार को प्रोबल्मस आयो उन्हें इस सदन में सोल्व किया गया। कुछ तो यहां पर कार्य होता है वह ट्रेडिशन्स केच कन्वेन्शन्स के अनुसार होता है लेकिन जहां पर रूल्स साइलेन्ट होते हैं उस वक्त हमें उनकी कमी पूरी करने के लिये नई प्रेक्टिसेज कायम करनी पड़ती हैं। मुझे उम्मीद है आप नये वातावरण के अनुरूप नियमों की व्याख्या करेंगे और नई प्रेक्टिसेज कायम करेंगे, रूल्स के इन्टरप्रटेशन्स के लिये तथा नये परस्पेक्टिवज के तौर पर आप कार्य करते रहेंगे जिससे को हारमनी क्रियेट हो। मैं समझता हूं कि ऐसा करने से अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष को इस सदन में सार्जेन्ट को बुलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वैसे भी अब की बार इस सदन में कई सार्जेन्ट चुन कर आ गये हैं। मैं विश्वास करता हूं कि आप इस सदन में ऐसी नयी परम्परायें डालेंगे जिससे कि हारमनी क्रियेट होगी और हम अपना क्रियेटिव रोल अदा कर सकेंगे। धन्यवाद।

श्री विशम्भरनाथ (महुआ) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको इस सदन का निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने के लिये धन्यवाद देता हूं।

(श्री विशम्भरनाथ)

अध्यक्ष महोदय, इस सदन में आपके पद की महान् गरिमा है और इस सदन में सभी महानुभाव बोलते हैं, चाहे वे सरकारी पक्ष के हों चाहे वे विरोधी पक्ष के हों, आपके हों। आपके अध्यक्ष होने के नाते आपका दायित्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप निष्पक्ष कार्य करते रहेंगे जिससे कि हम अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाते रहेंगे। ऐसा नहीं करने से भगवान के पास एक लाल फाइल खुली हुई है उसमें ईमानदारी से काम नहीं करने वालों का पत्ता किस वक्त और कब कट जाय पता ही नहीं लगता। इसलिये हमें यहां बैठ कर अपना कार्य ईमानदारी से करने देने के लिये आप निष्पक्ष होकर प्रोत्साहित करते रहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। अन्त में एक बार फिर मैं आपको अध्यक्ष चुने जाने के लिये धन्यवाद देता हूं।

श्री झाबरमल (फतेहपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं मेरी ओर से व मेरी पार्टी की ओर से आपको इस सदन में निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने के लिये बधाई देता हूं। अध्यक्ष महोदय, इस सदन के अध्यक्ष पद को महान गरिमा रही है और जिस प्रकार आपके आसन द्वारा पूर्व में निष्पक्ष होकर कार्य संचालन किया जाता रहा है वह भविष्य में भी किया जाता रहेगा और हमें आपसे सहयोग मिलता रहेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। आपके निष्पक्ष होकर काम करने से सदन में सबल पक्ष में जो इस बार में विरोधी पक्ष के सदस्य आये हैं वे इस दफा राजस्थान में पहली बार कमजोर विरोधी पक्ष के रूप में आये हैं। उन्हें आप सदन की कार्यवाही में बराबर भाग लेने के लिये समय का बंटवारा निष्पक्ष रूप से करते रहेंगे और हम लोगों को समय देते रहेंगे, ऐसी मैं उम्मीद करता हूं। इतना कह कर मैं आपको एक बार फिर आपके अध्यक्ष पर चुने जाने के लिए धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष द्वारा आभार प्रदर्शन

श्री रामकिशोर व्यास (अध्यक्ष) : माननीय सदस्यों, मैं आपका बहुत ही आभारी हूं कि आपने मुझ में अपना विश्वास व्यक्त किया। आपके मुझे राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष चुने जाने के लिए मैं आपका शुक्रिया अदा किन शब्दों में करूं वे शब्द मेरे पास नहीं हैं। आपने मुझे सर्वसम्मत से निर्विरोध अध्यक्ष पद के लिए चुना है उसके लिए मैं आप सभी सदस्यों का बहुत ही आभारी हूं। मैं इस सदन के, चाहे वे इस पक्ष के सदस्य हों, चाहे उस पक्ष के सदस्य हों, आपने जो जिम्मेदारी मुझ पर डाली है उसके लिए मैं आप लोगों का बहुत ही आभारी हूं मैं इस सब के लिए इतना ही निवेदन करना आप लोगों को चाहूंगा कि इस सदन की जो आज तक महान परम्परायें रही हैं, जो प्रतिष्ठा व महान् इज्जत रही है, जो महान् गरिमा व महान् महिमा रही है, उनका निर्वाह करने के लिए मैं पूरा प्रयत्न करूंगा और ऐसा करना मेरा पुनीत धर्म है और मेरा कर्तव्य भी यही है। इसके लिए सबसे बड़ी बात मेरे लिए यह होगी कि मैं आपको अपनी तरफ से यह निवेदन करना चाहूंगा कि मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा जो इस सदन की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हो। मेरा इस सदन में कार्य करने का

Page No.16

(श्री रामकिशोर व्यास)
जो रूप होगा वह ऐसा होगा जिसमें मैं हमेशा संविधान को दृष्टि में रखते हुए, नियमों व उप-नियमों को ध्यान में रखते हुए इस सदन का जो महान् परम्परायें रही हैं, उनको दृष्टि में रखते हुए जो वाजिब होगा उसी के अनुसार कार्य करूंगा।

मैं, माननीय सदयस्य गण, जो यहां चुन कर आये हैं उनको सबको मुबारकवाद देना चाहता हूं और आव्हान करना चाहता हूं बहुत से साथी तो पुनः चुनकर आये हैं और बहुत से साथी नये चुनकर आये हैं। जो पुनः चुनकर आये हैं उनके अनुभव का लाभ सदन को होगा और जो नये चुनकर आये उनका नया अनुभव सदन को मिलेगा। मैं पूरी आशा करता हूं कि जनता ने जिन साथियों को चुनकर भेजा है और जिन आशाओं के साथ चुनकर भेजा है और जिन भावनाओं के साथ चुन कर भेजा है वे सब इस सदन में आयें। वैसे धारा सभाओं का निर्माण दलीय आधार पर होता है। यहां पर भी भिन्न भिन्न दलों के लोग आये हैं और यहां विराज रहे हैं, मैं इतना इतमिनान दिलाना चाहता हूँ कि चाहे मुझे कांग्रेस दल की ओर से नामजद किया हो लेकिन नामजद और चुनाव किये जाने बाद मैं सभी का हूं, पूरे सदन का हूं, किसी विशेष दल का नहीं हूं। यहां पर जो निर्णय होंगे दलीय आधार से ऊपर उठकर होंगे और जैसा मैंने कहा परम्पराओं को दृष्टि में रखते हुये यहां के निर्णय किये जायेंगे। यह सदन काफी कठिनाई के दौर से गुजर रहा है और मुझे इसमें खुशी है कि राजस्थान की धारा सभा को अच्छे अच्छे नेता मिले और उनके मार्ग-दर्शन में इस सदन का भारत के अन्दर और राजस्थान के अन्दर एक गौरव बढ़ा है।

एक वक्त वह था जब देश को धारा सभाओं में हिंसा का वातावरण चला था उस वक्त भी हमारी धारा सभा ने, उस कठिनाई में भी संयम से काम लिया और उच्च परम्पराओं का निर्माण किया। उस कठिनाई के वक्त में भी राजस्थान की धारा सभा ने जो कुछ किया, जो संयम रखा, जो नियंत्रण रखा और जो परम्परायें डालीं वह सराहनीय हैं। उस जमाने के सदस्य और अध्यक्ष महोदय धन्यवाद के पात्र हैं। यह बात सही है कि इस दफा कांग्रेस में काफी बहुमत प्राप्त हुआ है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे विरोधी पक्ष संख्या में कम हों लेकिन उनकी बात सुनी जाएगी, जो वाजिब बात होगी, मानी जाएगी। इसी तरह मैं विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूँ कि आलोचना करना उनका एक अंग है, इतना मैं निवेदन करना चाहता हूं स्पष्ट और स्वस्थ आलोचना हो जिससे जनता का भला हो, देश का भला हो और हमारी धारा सभा के वाद-विवाद का स्तर ऊंचा हो क्योंकि हमारी नजर राजस्थान की तरफ ही नहीं सबकी तरफ रहे। जो कुछ वाद-विवाद करेंगे, जो कुछ बहस करेंगे, उसका सारे हिन्दुस्तान में जिक्र होता है इसलिये उसके सम्मान में अगर कोई बात कही जाती है तो हमारी धारा सभा का सिर नीचा होता है इसलिये कोई काम ऐसा नहीं करेंगे जिससे सदन में किसी प्रकार की आंच आये। इस सदन की महत्वता को अधिक सफल बनाने के लिये और जनता की आकांक्षाओं को ऊंचा बनाने के लिये मान-

(श्री रामकिशोर व्यास)

नीय सदस्यों के सहयोग की जरूरत है क्योंकि बिना सहयोग के यहां की कार्यवाही चलाना कठिन है इसलिए स्वस्थ परम्पराओं के संचालन करने में आपके सहयोग की पूरी पूरी जरूरत होगी, सदन के माननीय सदस्यों की मदद की जरूरत होगी। मुझे आशा है जैसा सहयोग आपने अब तक सदन को दिया है वैसा ही सहयोग मुझे मिलेगा। मैंने जैसा कहा इस सदन की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल कोई कार्य नहीं करूंगा। एक निष्पक्ष रूप से अध्यक्ष की हैसियत से जिस कुर्सी पर आप लोगों ने मुझे बिठाया है ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करूंगा।

जयहिन्द।

सदन की कार्यवाही कल प्रातः 11.00 बजे तक के लिये मुल्तवी की जाती है।

(तदन्तर सदन की कार्यवाही 4.26 सायंकाल कल प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)